

अछत अनूप निहार, दारिद नाशै सुख भरै ।
 सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौ सदा ॥
 ॐ ह्रीं श्री अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।
 पहुप सुवास उदार, खेद हरै मन शुचि करै ।
 सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौ सदा ॥
 ॐ ह्रीं श्री अष्टांगसम्यग्दर्शनाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।
 नेवज विविध प्रकार, छुधा हरै थिरता करै ।
 सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौ सदा ॥
 ॐ ह्रीं श्री अष्टांगसम्यग्दर्शनाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
 दीप-ज्योति तम हार, घट-पट परकाशै महा ।
 सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौ सदा ॥
 ॐ ह्रीं श्री अष्टांगसम्यग्दर्शनाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।
 धूप घन-सुखकार, रोग विघन जड़ता हरै ।
 सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौ सदा ॥
 ॐ ह्रीं श्री अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।
 श्रीफल आदि विथार, निहचै सुर-शिव-फल करै ।
 सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौ सदा ॥
 ॐ ह्रीं श्री अष्टांगसम्यग्दर्शनाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।
 जल गन्धाक्षत चारु, दीप धूप फल फूल चरु ।
 सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौ सदा ॥
 ॐ ह्रीं श्री अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

(दोहा)

आप आप निहचै लखै, तत्त्व-प्रीति व्यवहार ।
 रहित दोष पच्चीस हैं, सहित अष्ट गुन सार ॥